50

विजयी प्रवेश

(21:1-11)

इस अध्याय के साथ मत्ती मसीह के जीवन के अन्तिम पूर्ण सप्ताह जिसका चरम उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से होता है का आरम्भ करता है जिसे पारम्परिक रूप में ''दुख भोग सप्ताह'' कहा जाता है।[1] यह पदनाम लातीनी भाषा के शब्द *passio* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''दुख भोगना'' है। इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर शहीदों के दुखों का संकेत देने के लिए किया जाता था। नये नियम के लातीनी भाषा में अनुवाद किए जाने पर *passio* शब्द का इस्तेमाल यीशु के दुखों और उसके साथ की घटनाओं के लिए किया गया।[2] यीशु के जीवन में इस सप्ताह के महत्व को सुसमाचार की पुस्तकों के लेखकों द्वारा इसे दिए जाने वाले स्थान में देखा जाता है। सुसमाचार की पुस्तकों में 25 से 48 प्रतिशत इसी को दिया गया है।[3]

यह अध्याय यरूशलेम में यीशु की सेवकाई के महत्व को दिखाता है। विजयी प्रवेश से आरम्भ करके (21:1-11) यह मसीहा के रूप में यीशु के अधिकार को प्रकाशमान करता है। उसने मन्दिर को शुद्ध किया (21:12, 13) और अंधों और लंगड़ों को चंगे किया (21:14-17)। यहूदियों पर परमेश्वर के न्याय को दिखाने के लिए उसने बेफल अंजीर के पेड़ को सुखा दिया (21:18-22)। यहूदी अगुवे जो यीशु पर आरोप लगाने का बहाना ढूंढ़ते रहते थे उससे पूछने लगे कि उसे यह अधिकार कहां से मिला है (21:23-27)। उत्तर में उसने उनके विरुद्ध दो दृष्टांत दिए: दो पुत्रों और दाख की बारी का दृष्टांत (21:28-32) और गृहस्वामी और दाख की बारी का दृष्टांत (21:33-46)।

सप्ताह के पहले दिन अर्थात रविवार, महिमा का राजा यरूशलेम में आया। वह दीनतापूर्वक, गदहे पर सवार होकर नगर में पहुंचा। वह निसान महीने के आठवें दिन फसह से छह दिन पहले (यूहन्ना 12:1) बैतनिय्याह में पहुंच गया और अगले दिन नगर में गया। इस समय यरूशलेम और इसके आस-पास के इलाकों में बीस लाख से अधिक लोगों की भीड़ रही होगी।[4]

यीशु ने पहले चाहे मसीहा के रूप में अपनी पहचान के बारे में खामोश रहने को कहा था (12:16; 16:20; 17:9)। परन्तु अब उसे किसी गोपनीयता की आवश्यकता नहीं थी। पहली बार और केवल यहीं पर यीशु ने सार्वजनिक प्रदर्शन की योजना बनाई और इसे बढ़ावा दिया जिससे लोगों का ध्यान उसकी ओर जाए। नगर में इस प्रवेश के उसके लोगों के साथ सुर मिलाने से भविष्यवाणी पूरी हुई और यहूदी अगुओं को उसके विरुद्ध अपनी योजनाओं पर काम करना पड़ा।

विजयी प्रवेश की कहानी सच्चाई और ठुकराए जाने के साथ मिली-जुली है। दाऊद के पुत्र अर्थात इस्राएल के मसीहा के रूप में आरम्भ में यरूशलेम में चाहे यीशु का स्वागत हुआ पर बाद में किसी बात पर लोगों द्वारा उसे ठुकरा दिया गया। उन्हें एक सैनिक विजेता की उम्मीद

थी जो उनके विरोधियों को उखाड़ फैंके। जब यीशु उनकी उम्मीदों पर खरा न उतरा तो उन्होंने उसका समर्थन करना बंद कर दिया। वे उसके पास उन्हें रोमियों से बचाने के लिए चिल्ला रहे थे परन्तु बाद में धार्मिक अगुओं के साथ उन्होंने रोमियों से उसे क्रूस पर चढ़ाने को कहा। अपनी महिमा और ठुकराए जाने के साथ विजयी प्रवेश "दुख भोगने की भूमिका"[15] का काम करता है।

तैयारी (21:1-7)

[1]जब वे यरूशलेम के लिए निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए, तो यीशु के दो चेलों को यह कहकर भेजा। [2]"सामने के गांव में जाओ, वहां पहुंचते ही एक गदही बन्धी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ। [3] यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु को इन का प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा।" [4] यह इसलिए हुआ, कि जो वचन भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो;

[5]"सिय्योन की बेटी से कहो,
'देख, तेरा राजा तेरे पास आता है;
वह नम्र है और गदहे पर बैठा है;
वरन लादू के बच्चे पर।' "

[6]चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उनसे कहा था, वैसा ही किया। [7]और गदही और बच्चे को लाकर, उन पर अपने कपड़े डाले और वह उन पर बैठ गया।

आयत 1. यीशु और उसके चेले यरीहो से निकलकर (20:29) बैतनिय्याह में आ गए, जहां उन्होंने रात गुजारी (यूहन्ना 12:1)। बैतनिय्याह, जिसके नाम का अर्थ "अंजीरों का घर" है, लाज़र और मरियम और मारथा नामक उसकी दो बहनों का घर था (यूहन्ना 11:1; 12:1)। यह यरूशलेम से लगभग दो मील उत्तर की ओर, जैतून पहाड़ की पूर्वी ढलानों पर था (यूहन्ना 11:18)।

अगले दिन यीशु और उसका दल **यरूशलेम** के लिए निकट पड़े थे। मत्ती में यहां तक पवित्र नगर का उल्लेख केवल कुछ बार ही है। ज्योतिषी जानकारी की तलाश में वहीं गए थे, जहां से वे बालक मसीह तक जा सकते थे (2:1)। यरूशलेम के रहने वाले लोग जंगल में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को देखने (3:5) और बाद में गलील में यीशु को देखने निकले थे (4:25)। यहूदी अगवे उसे बदनाम करने के उद्देश्य से यरूशलेम से चलकर आए थे (15:1, 2)। परन्तु मत्ती यह संकेत नहीं देता कि यीशु इस समय से पहले नगर में गया हो (यहां उसके छह बार जाने के रिकॉर्ड के लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार में से देखना आवश्यक है)। तौभी यरूशलेम का उल्लेख अपने दुख भोगने की भविष्यवाणियों में यीशु द्वारा किया गया था (16:21; 20:17, 18)। पवित्र नगर में आना उसकी अपनी ही भविष्यवाणी का पूरा होना था।

बैतनिय्याह से निकलने के बाद यीशु और उसके चेले **बैतफगे** नामक स्थान पर आए जिसका अर्थ है "कच्चे [या आरम्भिक] अंजीरों का घर।" इसकी सही-सही स्थिति के बारे में

चाहे पता नहीं है पर यह बैतनिय्याह और यरूशलेम के बीच ही कहीं था।

जैतून पहाड़ समुद्रतल से 2,600 फुट की ऊंचाई तक की ऊंची चोटियों (सबसे ऊंचे प्वायंट) को दिया गया नाम है, जो यरूशलेम के उत्तर पूर्व में मन्दिर के पहाड़ से कोई 250 फुट ऊंचा है। इस पहाड़ की चोटी से शानदार नगर की पहली झलक का आनन्द लिया जा सकता था (लूका 19:41)। यह पहाड़ उत्तर से दक्षिण तक लगभग दो मील लम्बा है, जिसमें करेम, ऊपर उठाए जाने, नबियों के पहाड़ और अप्रसन्नता के पहाड़ की चार चोटियां हैं। दूसरी और तीसरी चोटियों को जिन्हें केवल एक सतही गड्ढे के द्वारा अलग किया जाता है, आम तौर पर मिल जाती हैं और उन्हें "जैतून का सही पहाड़" कहा जाता है।[6] यरूशलेम और बैतनिय्याह के बीच के मार्ग को इन चोटियों के बीच केन्द्र में घुमाया गया है।

आयत 2. दल के बैतफगे में पहुंचने पर यीशु ने अपने दो चेलों को एक मिशन पर यह कहते हुए भेजा, "**सामने के गांवों में जाओ।**" इस आज्ञा का अनुवाद "उस गांव में जाओ जो तुम्हारे सामने है" भी हो सकता है (NRSV; JNT)। यह पक्का नहीं है कि वह गांव बैतफगे ही था या कोई और।

फिर यीशु ने कहा, "**वहां पहुंचते ही एक गदही बन्धी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ।**" मरकुस और लूका केवल "गदही" की बात करते हैं (मरकुस 11:2; लूका 19:30)। इस चूक का कारण बेशक यह है कि गदही ही वह जानवर है जिसके ऊपर सवार होकर यीशु नगर में गया। वे कहते हैं कि गदही पर पहले कभी कोई नहीं चढ़ा था (मरकुस 11:2; लूका 19:30)। इसकी मां का पास होना शोर शराबे भरी भीड़ में शांत रखने का काम करता होगा।

आयत 3. यीशु ने दोनों चेलों को बताया कि **यदि कोई** उनसे कुछ पूछे तो क्या जवाब दे। आखिर किसी पराए आदमी के लिए किसी नगर में जाकर बिना किसी से पूछे किसी के गदहे को लेना असामान्य बात होनी थी।[7] चेलों से यह कहने को कहा गया था कि "**प्रभु को इन का प्रयोजन है।**" उनके स्वामी ने (लूका 19:33) इतनी आसानी से इन्हें अपने जानवर क्यों लेने देना था, इसकी व्याख्या नहीं की गई। जैसा कि "प्रभु" शब्द से सुझाव मिलता है वे यीशु और उसके चेलों को भी जानते होंगे। इन पशुओं का इस्तेमाल करने की मसीह की इच्छा पहले से ठहराई गई होगी। लियोन मौरिस को लगा कि यीशु की बात "पहले से ठहराया गया पासवर्ड" हो सकता है।[8]

आयत 4. यरूशलेम में यीशु के प्रवेश की घटना के आस-पास स्पष्ट संकेत था। यहूदी लोग आम तौर पर गदहे को शान से जोड़ते थे। उनके राजा और विजयी लोग गदहों या खच्चरों पर सवार होते थे (मरकुस 11:2; लूका 19:30)। घोड़े पर सवार होने के उलट गदहे पर सवार होना इस बात का भी संकेत था कि राजा शांति में आ रहा है (देखें न्यायियों 5:10; 1 राजाओं 1:33)। यीशु का यरूशलेम में इस प्रकार से प्रवेश करने का स्पष्ट कारण लोगों, आगे की पीढ़ियों को अपने राज्य के आत्मिक स्वभाव से प्रभावित करना था। यीशु सचमुच में "शांति का राजकुमार" बनकर आया (यशायाह 9:6)।

गद्हे पर सवार होकर, यरूशलेम में दीनता से प्रवेश करके यीशु राजा ने पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा किया। ऐसे ही पदनाम के साथ मत्ती में इस सच्चाई पर ज़ोर दिया गया है:

यह इसलिए हुआ, कि जो वचन भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो (देखें 1:22; 2:15, 17, 23; 4:14; 8:17; 12:17; 13:35; 26:56; 27:9)। यहां पर ''भविष्यवक्ता'' नहीं बताया गया कि वह कौन है। परन्तु कुछ प्राचीन गवाहों में ''जकर्याह'' है जबकि अन्यों का कहना है कि यह ''यशायाह'' है।[9]

आयत 5. यहां पर दिया गया उद्धरण यशायाह 62:11 और जकर्याह 9:9 का मिश्रण है:

> ''सिय्योन की बेटी से कहो,
> 'देख, तेरा राजा तेरे पास आता है;
> वह नम्र है और गदहे पर बैठा है;
> वरन लादू के बच्चे पर।' ''

एक जैसे विषयों वाली दो भविष्यवाणियों को लेकर उन्हें इकट्ठे कर देना सामान्य यहूदी प्रथा थी।[10] ''सिय्योन की बेटी से कहो'' यशायाह 62:11 से लिया गया है। ऐसी ही शब्दावली जकर्याह 9:9 में मिलती है जिसका आरम्भ ''हे सिय्योन की बेटी बहुत ही मगन हो!'' आने वाले राजा से सम्बन्धित शेष हवाला बाद की भविष्यवाणी से लिया गया है।

''सिय्योन की बेटी'' अभिव्यक्ति का इस्तेमान पुराने नियम में आम तौर पर यरूशलेम के लिए होता था (भजन संहिता 9:14; यशायाह 37:22; यिर्मयाह 4:31; विलापगीत 1:6)। इसका अर्थ नगर के रहने वालों के लिए भी हो सकता था। मूल में सिय्योन यबूसी किले को कहा गया था जिस पर दाऊद ने कब्ज़ा किया था और इसका नाम ''दाऊदपुर'' हो गया था (2 शमूएल 5:7)। यह उसके महल वाली जगह थी (2 शमूएल 5:11)। यही वह स्थान था जहां दाऊद ने यरूशलेम में लाने जाने वाले वाचा के संदूक को रखा था (2 शमूएल 6:12)। बाद में सुलेमान द्वारा दाऊदपुर के उत्तर में मन्दिर बनाने के बाद संदूक वहां ले जाया गया था (1 राजाओं 8:1)। तब से ''सिय्योन'' नाम मन्दिर के पहाड़ से जुड़ गया (भजन संहिता 74:2)। ये शब्द अन्त में पूरे नगर के लिए इस्तेमाल होने लगा (भजन संहिता 48)।

जकर्याह 9:9 की भविष्यवाणी में एक राजा की पूर्व सूचना थी जिसने यरूशलेम में आना था। उसे ''नम्र'' (*praus*) या ''दीन'' (5:5; 11:29 पर टिप्पणियां देखें) बताया गया था। उसका शान्तिपूर्ण प्रवेश रथ, युद्ध के घोड़े और युद्ध के तीर के विपरीत है (जकर्याह 9:10)। मत्ती में चाहे नहीं लिखा गया पर यह भविष्यवाणी उसे ''धर्मी और उद्धार पाया हुआ'' के रूप में भी दिखाती है।

आयत 6. उन्हें चाहे यीशु के महिमा पाने के बाद तक इन पदों के महत्व की समझ नहीं आई थी (यूहन्ना 12:16), परन्तु दोनों **चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उनसे कहा था, वैसा ही किया**। उन्हें पहली रुकावट ''उन में से जो वहां खड़े थे'' किसी ने दी (मरकुस 11:5), जिन्हें लूका 19:33 में गदही के ''मालिक'' बताया गया है। जब चेलों ने गद्‌ही के उन मालिकों को बताया कि ''प्रभु को इन का प्रयोजन है'' (21:3) तो उन्होंने इन जानवरों को इस्तेमाल करने के लिए ले जाने की तुरन्त अनुमति दे दी (मरकुस 11:6; लूका 19:34)।

आयत 7. चेले **गदही और बच्चे को** प्रभु के पास ले आए। गदही को उसके बच्चे से अलग करने की रीत नहीं थी।[11] उनके पास कोई काठी नहीं थी इस कारण चेलों ने **उन पर अपने कपड़े**

डाले। यूनानी भाषा का शब्द (*himation*) बहुवचन शब्द होने पर सामान्य रूप में इसका अर्थ ''कपड़े'' हो सकता है। परन्तु आम तौर पर यह शब्द ''चोगा'' का अर्थ देता है। स्पष्टतया चेलों ने बच्चे और उसकी माता को अपने बाहरी वस्त्रों से ढांप दिया।

इसके बाद यीशु **उन पर बैठ गया**। यूनानी धर्मशास्त्र में यहां मूलतया कहा गया है कि यीशु ''उन'' पर बैठ गया। क्या इसकी व्याख्या यह अर्थ निकालने के लिए होनी चाहिए कि वह दोनों पशुओं के ऊपर पैर फैलाकर बैठ गया? कइयों का ऐसा भी विचार है। वे यह मान लेते हैं कि मत्ती ने जकर्याह 9:9 की व्याख्या यह कहने के लिए की कि ''गदहे पर *और* गदहे के बच्चे पर सवार हुआ।'' इस प्रकार से कहा जाता है कि मत्ती यह दिखाने का प्रयास कर रहा था कि यीशु ने पूरी तरह से भविष्यवाणी को पूरा किया। परन्तु ऐसी व्याख्या अनावश्यक है। भाषा से आवश्यक नहीं कि यह लगे कि यीशु दोनों जानवरों पर सवार हुआ होगा। वह बच्चे पर बैठा हुआ होगा जब कि गदही उसके दाहिनी ओर थी।[12] स्वभाव और व्यवहार दोनों ही इस बात की मांग करते हैं कि यीशु केवल बच्चे पर चढ़ा।

स्वागत (21:8-11)

[8]तब बहुत से लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए, और अन्य लोगों ने पेड़ों से
डालियां काटकर मार्ग में बिछाई। [9]और जो भीड़ आगे-आगे जाती और पीछे-पीछे चली
आती थी, पुकार पुकारकर कहती थी,

''दाऊद के सन्तान को होशाना;
धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है,
आकाश में होशाना!''

[10]जब उस ने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो सारे नगर में हलचल मच गई; और लोग कहने
लगे, ''यह कौन है?'' [11]लोगों ने कहा, ''यह गलील के नासरत का भविष्यवक्ता यीशु
है।''

आयत 8. लोगों की भीड़ या तो बैतनिय्याह से यीशु के पीछे-पीछे आई थी या वे जैतून पहाड़ पर यीशु की राह देख रहे थे। दूसरे लोग उससे भेंट करने को यरूशलेम में से आए थे और कुछ फसह के लिए नगर में आने वाले यात्री होंगे। कुछ लोग गलील से आए हो सकते हैं। यीशु के इकट्ठा हुए **लोगों** के बीच में से गदही के बच्चे पर सवार होने पर उपासकों ने **अपने कपड़े मार्ग में बिछाए**। आयत 7 की तरह ''कपड़े'' उनके ''चोगों'' को (NIV; NRSV) कहा गया है जो उनके बाहरी वस्त्र थे। चोगा उतारकर सम्राट के सामने बिछाना प्राचीनकाल में उसके अधिकार के प्रति सम्मान दिखाने का एक ढंग था (2 राजाओं 9:13) जैसे कोई यह कह रहा हो, ''मैं अपने आपको आपके हाथों में दे रहा हूं।''

अन्य लोगों ने पेड़ों से डालियां काटकर मार्ग में बिछाई। मरकुस 11:8 कहता है कि उन्होंने ''खेतों में से डालियां काट काटकर बिछा दी'' जबकि यूहन्ना 12:13 विशेष रूप से ''खजूर की डालियां'' बताता है। खजूर का पेड़ पुराने समय से पवित्र घटनाओं से जुड़ा रहा

है। व्यवस्था में आज्ञा थी कि झोंपडियों के पर्व के दौरान खजूर की डालियां इस्तेमाल की जाएं (लैव्यव्यवस्था 23:40, 42; देखें नहेम्याह 8:15)। सुलैमान के मन्दिर में (1 राजाओं 6:29, 32, 35) और नये मन्दिर के यहेजकेल के दर्शन में खजूर के पेड़ों के चित्र थे और कफ़रनहूम में सम्भालकर रखे गए एक आराधनालय सहित प्राचीन आराधनालयों को खजूर के पेड़ों से सजाया जाता था (यहेजकेल 40:16–37; 41:18–20, 25, 26)। एक स्वर्गीय दर्शन में यूहन्ना ने परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े सफ़ेद वस्त्र पहने लोगों की एक बड़ी भीड़ को अपने हाथों में खजूर की डालियां पकड़े हुए देखा (प्रकाशितवाक्य 7:9)।

खजूर का पेड़ राष्ट्रीयता के प्रतीक का भी काम करता था। पुराने और नये नियम के बीच के समय और नये नियम के युग में खजूर की डालियां और पत्ते यहूदी सिक्कों पर छपे होते थे। मक्काबियों के समय में खजूर की डालियों का इस्तेमाल यहूदियों के शत्रुओं के पराजित होने के बाद जश्न में किया जाता था।[13] यह अच्छा हो सकता है कि यहां यीशु और लोगों के विचारों में भिन्नता दिखाई देती है। गदही पर सवार होकर यीशु ने संकेत दिया कि उसकी कोई क्रांतिकारी अभिलाषा नहीं है; जबकि लोगों ने खजूर की डालियों का इस्तेमाल मक्काबियों की विजयों का संकेत देने के लिए किया जिसका अर्थ है कि वे उसे अभी भी एक क्रांतिकारी मसीहा के रूप में देखते थे।[14]

आयत 9. भीड़ ने यीशु को ऐसे घेर लिया जैसे कोई शाही जुलूस हो; कुछ **आगे-आगे** जबकि अन्य **पीछे-पीछे** आ रहे थे। इस दौरान वे भजन संहिता 118 के शब्द **पुकार** रहे थे। यह भजन जो हलेल के भजनों में से (113–118) था जिन्हें फसह पर गाया जाता था, इस्राएल के मिस्र की दासता से परमेश्वर के छुटकारे को मनाने के लिए था। यह विशेष रूप से मसीहा से सम्बन्धित है और आम तौर पर नये नियम में दोहराया जाने वाला भजन है, विशेषकर इसकी "कोने के सिरे का पत्थर" वाली अकृति (21:42; मरकुस 12:10, 11; लूका 20:17; प्रेरितों 4:11; 1 पतरस 2:7)।

होशाना एक इब्रानी अभिव्यक्ति का यूनानी लिप्यंतरण है। इस शब्द का अर्थ मूलतया "अब बचा ले" या "बचा ले, हम प्रार्थना करते हैं।" यह स्तुति की अभिव्यक्ति बन गया था। इस संदर्भ में यह भजन संहिता 118:25 से लिया गया है: "हे यहोवा, विनती सुन, *उद्धार कर*! हे यहोवा, विनती सुन, सफलता दे!" भीड़ ने **दाऊद के संतान** की स्तुति की। मसीहा से जुड़े सामान्य इस्तेमाल वाले इस शीर्षक से यीशु की पहचान उनकी अपेक्षित छुटकारा दिलाने वाले के रूप में हुई (1:1 पर टिप्पणियां देखें)।

भीड़ ने भजन संहिता 118:26 की भाषा भी इस्तेमाल की: "धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।" यहूदी परम्परा में इस पुकार का इस्तेमाल आरम्भ के दिनों के लिए नगर में यात्रियों के स्वागत के लिए किया जाता था। परन्तु इस अवसर पर इससे उनके उस अपेक्षित राजा को महिमा दी गई जिसने अपने राज्य का शुभारम्भ करना था (यूहन्ना 12:13)।[15] राज्य के बारे में लोगों की नासमझी उनके "होशाना!" पुकारने और कुछ दिनों बाद "उसे क्रूस दो!" (27:22) चिल्लाने से पता चलती है। यह बदलाव क्यों? मसीहा के रूप में उनके मन में उसकी तस्वीर बदल चुकी थी।

आयत 10. यीशु के अपने साथ-साथ चलने और चिल्लाने वालों के साथ **यरूशलेम में**

प्रवेश करने पर **नगर** के अन्दर **हलचल** मच गई।[16] ''हलचल मच गई'' के लिए यूनानी भाषा का शब्द *seiō* है जिससे अंग्रेजी भाषा का शब्द ''seismic'' मत्ती की पुस्तक में यह दो और बार इस्तेमाल हुआ है। यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय धरती ''डोल'' जाने पर (27:51) और पहरेदारों के कब्र पर स्वर्गदूत के भय से ''कांप'' जाने पर (28:4)। आयत 10 में *seiō* का अनुवाद ''प्रभावित हुए'' (KJV), ''खलबली मच गई'' (NRSV) ''जोश से भर गए'' (NCV) और ''कोलाहल में फेंक दिए गए'' (TEV) भी हुआ है।

नगर के भीतर के लोग पूछ रहे हैं, **''यह कौन है?''** यीशु ने चाहे गलील में अपना अधिकतर समय बिताया था, परन्तु वह यरूशलेम के लिए कोई अजनबी नहीं था। यूहन्ना रचित सुसमाचार से पता चलता है कि अपनी सेवकाई के दौरान वह कई अवसरों पर वहां गया था (यूहन्ना 2:13; 5:1; 7:10, 14; 10:22, 23; 18:20)। यह प्रश्न उन यहूदियों द्वारा दिया गया हो सकता है जो यरूशलेम में रहते थे और यीशु के इस प्रकार से नगर में प्रवेश करने पर स्तब्ध थे या जो भीड़ के कारण उसे देख नहीं पा रहे थे। एक और सम्भावना है कि यह प्रश्न यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों द्वारा पूछा गया हो सकता है जो फसह के दिन के लिए यरूशलेम में आए हुए थे। यहूदी लोग सारे रोमी साम्राज्य में से पर्वों को मनाने के लिए आते थे (प्रेरितों 2:5, 9–11) इस कारण हो सकता है कि इनमें से कुछ यात्रियों ने कभी यीशु को सुना ही न हो।

आयत 11. लोगों ने उत्तर देना जारी रखा, **''यह गलील के नासरत का भविष्यवक्ता यीशु है।''** भीड़ के ये लोग गलीली थे और पर्व के लिए यरूशलेम में आए हुए थे। उनमें से कुछ तो यीशु और उसके प्रेरितों के साथ आए थे। उसे बोलते सुनने और आश्चर्यकर्म करते हुए देखने के बाद वे गर्व से कि वह उनके इलाके का है उसे गलील का भविष्यवक्ता कहते हुए आनन्द से उसकी जय जयकार कर रहे थे।

भविष्यवक्ता के रूप में यीशु का विषय मत्ती 13:57 और 16:14 में भी दिखाई देता है। वास्तव में वह एक भविष्यवक्ता था (मरकुस 6:15; लूका 7:16; 13:33; यूहन्ना 4:44)। उसने न केवल होने वाली बातें प्रगट कीं बल्कि मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर का संदेश भी दिया। इस अवसर पर भीड़ यीशु को ''वह भविष्यवक्ता [मूसा की तरह] जो जगत में आने वाला था'' मान रही हो सकती है (यूहन्ना 6:14; देखें व्यवस्थाविवरण 18:15, 18; यूहन्ना 7:40; प्रेरितों 3:22; 7:37)।

भीड़ ने यह भी कहा कि यीशु ''नासरत'' नगर से है (2:23 पर टिप्पणियां देखें)। नये नियम के समय में किसी को आम तौर पर उसके नाम और उसके निवास स्थान से जाना जाता था। ''यीशु नासरी'' पदनाम नये नियम में आम तौर पर मिलता है (26:71; मरकुस 1:24; 10:47; 16:6; लूका 4:34; 18:37; 24:19; यूहन्ना 1:45; 18:5, 7; प्रेरितों 2:22; 3:6; 4:10; 6:14; 10:38; 22:8; 26:9)। मत्ती के पाठकों को पता था का कि यीशु न केवल ''गलील के नासरत का'' (21:11) बल्कि ''यहूदिया के बैतलहम का भी था'' (2:1)।[17]

अपने विजय प्रवेश के बाद यीशु ने और खुलकर यहूदी अगुओं का सामना किया। अगले कुछ दिनों में उसके आश्चर्यकर्मों और शिक्षाओं ने न केवल उसके चेलों को चकित किया बल्कि उसके शत्रुओं को भड़काया भी जो क्रूस पर चढ़ाए जाने की ओर ले जाने का कारण बना।

विजयी प्रवेश (21:1-11)

यरूशलेम में यीशु का विजयी प्रवेश उसके बारे में कई महत्वपूर्ण सबक बताता है।

1. *यीशु की सर्वज्ञता* (21:1-3)। किसी से गद्हा मांगना चाहे पहले से ठहराया हुआ हो सकता है परन्तु यह भी सम्भव है कि यीशु को उस जानवर के बारे में अलौकिक ढंग से पता था। यदि उसे पता था तो कहानी में कई बातें जुड़ जाती हैं जो उसके परमेश्वर होने की पुष्टि करते हुए उसके आश्चर्यकर्म के ज्ञान को दिखाती हैं।

2. *यीशु द्वारा की गई भविष्यवाणी का पूरा होना* (21:4, 5)। यरूशलेम में गदहे की सवारी करने पर प्रभु पवित्र शास्त्र को पूरा कर रहा था (जकर्याह 9:9)। मत्ती बार-बार इस बात पर ज़ोर देता है कि पुराना नियम मसीह में पूरा होता है।

3. यीशु की दीनता (21:6, 7)। यीशु तलवार निकालकर सफेद घोड़े पर सवार होकर यरूशलेम में नहीं गया, हालांकि वह जा सकता होगा (प्रकाशितवाक्य 19:11-16)। वह गदही के बच्चे पर दीन होकर आया। सैनिक मसीहा होने के बजाय वह दुखी सेवक के रूप में आया (यशायाह 53)।

4. *यीशु का आदर* (21:8-11)। भीड़ के कुछ लोगों ने अपने बाहरी वस्त्र उतार दिए और उन्हें सड़क पर बिछा दिया ताकि उसका गदहा उनके ऊपर से होकर चले। अन्यों ने भी वैसे ही सड़क पर पेड़ों की डालियां काटकर बिछा दीं। संक्षेप में वह राजा के लिए लाल गलीचा बिछा रहे थे। वे यीशु को प्रभु के नाम में धन्य कहते हुए "दाऊद के संतान को होशाना" पुकार रहे थे। यीशु वास्तव में सारी महिमा और आदर के योग्य है (प्रकाशितवाक्य 5:9-14)।

5. *यीशु के प्रति लोगों की चंचलता।* बहुत से लोगों ने चाहे उसकी महिमा की थी परन्तु कुछ ही दिनों के बाद वे उसके विरुद्ध हो गए। यहूदी अगुओं द्वारा भड़काए जाने से वे पिलातुस के पास उसकी मृत्यु की मांग करते हुए चिल्ला रहे थे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए" (27:22, 23)।

विजयी प्रवेश कुछ ही हफ्तों बाद होने वाले यीशु के राज्य अभिषेक के पहले होने वाली घटना थी। अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद यीशु चालीस दिन तक अपने चेलों को दिखाई देता रहा (प्रेरितों 1:3)। फिर वह पिता के दाहिने हाथ ऊंचा किए जाने के समय स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया (प्रेरितों 1:9-11)। वहां पर वह अपने राज्य पर प्रभु और मसीह के रूप में शासन करता है (प्रेरितों 2:33-36)। अब वह पूरे संसार के विश्वासी मसीही लोगों द्वारा सम्मानित किया जाता है।

डेविड स्टिवर्ट

खजूरी रविवार (21:1-11)

खजूरी रविवार या पाम संडे (उस रविवार या ईस्टर के रूप में बहुत से लोगों द्वारा मनाए जाने वाले रविवार से पहले का सप्ताह), इसे यह नाम मत्ती 21, मरकुस 11, लूका 19 और यूहन्ना 12 में दर्ज घटना से मिला है। पवित्र शास्त्र में इस दिन को इस प्रकार नहीं मनाया गया

था, परन्तु यह मसीह के जीवन से जुड़ी उन कई मानवीय परम्पराओं में से एक है। हमें उस दिन को तो मनाने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु जिस बात को यह दर्शाता है उसे याद रखना बहुत ही अच्छा है।

टिप्पणियां

[1]कुछ विद्वान चाहे विजयी प्रवेश के समय को एक पहले समय (झोंपड़ियों का पर्व या समर्पण का पर्व) पर बताने का प्रयास करते हैं, परन्तु यूहन्ना रचित सुसमाचार इसे स्पष्ट रूप में दुख भोगने के सप्ताह के भीतर रखता है (यूहन्ना 12:1, 12)। [2]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 126 में माइकल विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' अंग्रेजी के कुछ संस्करणों (KJV; ASV; RSV; NJB) में प्रेरितों 1:3 यीशु के दुख उठाने और मृत्यु के सम्बन्ध में ''दुख उठाने के बाद'' वाक्यांश है। [3]वही। [4]जोसेफस, चाहे उसने बड़ा चढ़ाकर बताया हो, ने अनुमान लगाया कि लगभग चालीस साल बाद होने वाले फसह में उन दिनों में 27,00,200 लोगों ने भाग लिया था, जो यरूशलेम के विनाश का कारण बना (ई. 70)। उसने यह मानते हुए कि औसतन दस लोगों ने एक मेमना खाया होगा, उस समय काटे गए मेम्नों की संख्या के आधार पर लगाया। (जोसेफस *वारस* 6.9.3.) एक और अवसर पर, ई. 65 में उसने तीस लाख लोगों के फसह में भाग लेने का अनुमान लगाया (जोसेफस 2.14.3.) [5]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 591. [6]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 762–63. [7]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 519. [8]वही। [9]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 44. [10]एक और उदाहरण मरकुस 1:2, 3, जो मलाकी 3:1 और यशायाह 40:3 को मिलाता, सामान्य वाक्यांश ''मार्ग तैयार करो'' पर आधारित है।

[11]मिशनाह *बाबा बथरा* 5.3. [12]हैग्नर, 595. [13]1 मकाबियों 13:51; 2 मकाबियों 10:7. [14]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 494. [15]हैग्नर, 596. ''जो आता है'' वाक्यांश मसीहा के पद के लिए काम आता है (3:11; 11:3 पर टिप्पणियां देखें)। [16]मत्ती के आरम्भ के निकट, ज्योतषियों की खोज से यरूशलेम नगर ''घबरा गया'' था (2:3)। इस आयत में यूनानी क्रिया (*tarassō*) का अर्थ ''हलचल मचना'' या ''कांप जाना'' भी है। [17]कीनर, 493.